Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

भारत के लकड़ी बाजार की वृद्धि एवं विकास प्रवृत्तियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

शिवानी चौरसिया
शोधार्थी (वाणिज्य), अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा (म.प्र.)
डॉ. विद्‌युत प्रकाश मिश्रा
शोध निर्देशक, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (वाणिज्य), राजभानु सिंह स्मारक महाविद्यालय, मनिकवार, जिला-रीवा (म.प्र.)

सारांश
भारत में लकड़ी बाजार निर्माण, फर्नीचर, आंतरिक सज्जा, पैकेजिंग, फ्लोरिंग तथा औद्योगिक गतिविधियों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। शहरीकरण, आवासीय एवं वाणिज्यिक निर्माण में वृद्धि, अवसंरचनात्मक विकास तथा इंजीनियर्ड वुड उत्पादों के बढ़ते उपयोग ने भारतीय लकड़ी बाजार के विस्तार को गति प्रदान की है। प्रस्तुत शोध-पत्र में भारत के लकड़ी बाजार की वृद्धि प्रवृत्ति, प्रमुख विकास कारकों, बाजार की बाधाओं तथा प्रमुख उपयोग क्षेत्रों का विश्लेषण किया गया है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2021 में अनुमानित वार्षिक वृद्धि दर 3.1 प्रतिशत थी, जो वर्ष 2025 में बढ़कर 6.4 प्रतिशत हो गई। इसी क्रम में वर्ष 2026–2032 की पूर्वानुमान अवधि के लिए बाजार की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) 7.6 प्रतिशत अनुमानित की गई है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि निर्माण क्षेत्र, इंजीनियर्ड वुड, फर्नीचर विनिर्माण तथा लकड़ी आधारित पैकेजिंग बाजार की वृद्धि के प्रमुख आधार हैं। दूसरी ओर आयात पर निर्भरता, कच्चे माल की उपलब्धता, पर्यावरणीय एवं वन संरक्षण संबंधी नियम, कीमतों में उतार-चढ़ाव तथा वैकल्पिक निर्माण सामग्री बाजार के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ हैं। अध्ययन के आधार पर सतत वानिकी, स्थानीय प्रसंस्करण, इंजीनियर्ड वुड निर्माण, आधुनिक तकनीक तथा लकड़ी आधारित पैकेजिंग के विस्तार को भविष्य की प्रमुख संभावनाओं के रूप में रेखांकित किया गया है।

शब्दकुंजी - भारत का लकड़ी बाजार, लकड़ी उद्योग, इंजीनियर्ड वुड, निर्माण उद्योग, फर्नीचर उद्योग, पैकेजिंग, सतत वानिकी, बाजार वृद्धि, CAGR, लकड़ी प्रसंस्करण।

1. परिचय

लकड़ी मानव सभ्यता के आरंभिक काल से ही निर्माण, आवास, फर्नीचर, परिवहन तथा विभिन्न घरेलू एवं औद्योगिक आवश्यकताओं की पूर्ति का महत्वपूर्ण साधन रही है। आधुनिक अर्थव्यवस्था में भी लकड़ी का महत्व समाप्त नहीं हुआ है, अपितु तकनीकी विकास के साथ इसके उपयोग के स्वरूप में परिवर्तन आया है। पारंपरिक प्राकृतिक लकड़ी के साथ-साथ प्लाईवुड, MDF, लैमिनेटेड बोर्ड तथा अन्य इंजीनियर्ड वुड उत्पादों का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। इस परिवर्तन ने लकड़ी उद्योग को केवल प्राकृतिक संसाधन आधारित क्षेत्र न रखकर एक व्यापक विनिर्माण एवं प्रसंस्करण उद्योग का स्वरूप प्रदान किया है।

भारत में बढ़ता शहरीकरण, आवास निर्माण, वाणिज्यिक भवनों का विस्तार, आधारभूत संरचना का विकास तथा फर्नीचर एवं आंतरिक सज्जा की बढ़ती मांग लकड़ी बाजार के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके अतिरिक्त ई-कॉमर्स और लॉजिस्टिक्स क्षेत्र के विस्तार से पैलेट, क्रेट और अन्य लकड़ी आधारित पैकेजिंग उत्पादों की मांग में वृद्धि हुई है। इंजीनियर्ड वुड उत्पादों में एकरूपता, अपेक्षाकृत बेहतर लागत नियंत्रण और विभिन्न उपयोगों के लिए अनुकूलता के कारण इनकी स्वीकार्यता भी बढ़ रही है।

भारत का लकड़ी बाजार अनेक प्रकार के कच्चे माल और उपयोग क्षेत्रों में विभाजित है। टिम्बर प्रकारों में ऐश, बीच, बर्च, सीडर, फर, महोगनी, मेपल तथा ओक जैसे वर्ग शामिल हैं। अनुप्रयोग की दृष्टि से फ्यूल वुड, इंडस्ट्रियल राउंड वुड और इंजीनियर्ड वुड महत्वपूर्ण हैं, जबकि उपयोग के स्तर पर निर्माण, फ्लोरिंग, पैकेजिंग तथा परिवहन प्रमुख क्षेत्र हैं। अंतिम उपयोग की दृष्टि से आवासीय एवं वाणिज्यिक तथा औद्योगिक क्षेत्र बाजार की मांग को प्रभावित करते हैं।

2. उदेश्य

भारत के लकड़ी बाजार की वृद्धि प्रवृत्ति, प्रमुख विकास कारकों, बाधाओं तथा प्रमुख उपयोग विश्लेषण करना।

3. शोधविधि

प्रस्तुत अध्ययन **वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोधविधि** पर आधारित है। अध्ययन में प्राथमिक आंकड़ों के स्थान पर द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया है। अध्ययन में वर्ष 2021 से 2025 तक की अनुमानित वार्षिक वृद्धि दर तथा वर्ष 2026–2032 के लिए अनुमानित 7.6 प्रतिशत CAGR को आधार बनाया गया है।

इसके अतिरिक्त लकड़ी बाजार के प्रमुख विकास कारकों, अवरोधों, बाजार विभाजन तथा उपयोग क्षेत्रों से संबंधित उपलब्ध सूचनाओं का विषय-वस्तु के आधार पर विश्लेषण किया गया है। आंकड़ों को सारणीबद्ध कर प्रतिशत एवं तुलनात्मक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन का विश्लेषण बाजार वृद्धि, मांग को प्रभावित करने वाले कारकों, प्रमुख बाधाओं तथा भविष्य की संभावनाओं को समझने के उद्देश्य से किया गया है।

4. विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका 1- भारत के लकड़ी बाजार की वर्षवार अनुमानित वृद्धि दर, 2021–2025

वर्ष	अनुमानित वार्षिक वृद्धि दर (%)	प्रमुख वृद्धि कारक
2021	3.1	निर्माण लकड़ी तथा ग्रामीण एवं आवासीय क्षेत्रों में फ्यूल वुड की मांग
2022	3.9	आवासीय परियोजनाओं तथा फर्नीचर विनिर्माण गतिविधियों का विस्तार

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

2023	4.8	निर्माण एवं आंतरिक सज्जा में इंजीनियर्ड वुड उत्पादों का बढ़ता उपयोग
2024	5.6	अवसंरचना विकास तथा लॉजिस्टिक्स एवं पैलेट विनिर्माण में बढ़ती मांग
2025	6.4	फ्लोरिंग तथा सुरक्षात्मक पैकेजिंग में लकड़ी के बढ़ते उपयोग
2026–2032	**7.6 CAGR**	**निर्माण, इंजीनियर्ड वुड, फर्नीचर, पैकेजिंग तथा सतत निर्माण की मांग**

स्रोत- Government of India**.** National Agroforestry Policy. Ministry of Agriculture and Farmers Welfare, Government of India.

तालिका 1 से स्पष्ट होता है कि भारत के लकड़ी बाजार में 2021 से 2025 के बीच लगातार वृद्धि की प्रवृत्ति रही। वर्ष 2021 में अनुमानित वृद्धि दर 3.1 प्रतिशत थी, जो 2022 में बढ़कर 3.9 प्रतिशत हो गई। वर्ष 2023 में यह 4.8 प्रतिशत तथा 2024 में 5.6 प्रतिशत तक पहुंची। वर्ष 2025 में अनुमानित वृद्धि दर 6.4 प्रतिशत रही। इस प्रकार 2021 से 2025 के बीच वृद्धि दर में **3.3 प्रतिशत अंक** की वृद्धि दिखाई देती है। बाजार की यह प्रवृत्ति आवास निर्माण, फर्नीचर उद्योग, इंजीनियर्ड वुड के विस्तार, लॉजिस्टिक्स तथा पैकेजिंग की बढ़ती मांग से जुड़ी हुई है। 2026–2032 के लिए 7.6 प्रतिशत CAGR का अनुमान से स्पष्ट है कि आने वाले वर्षों में बाजार की विकास गति और मजबूत रहने की संभावना है।

तालिका 2- भारत के लकड़ी बाजार के प्रमुख विकास कारक एवं प्रभावित क्षेत्र

प्रमुख विकास कारक	प्राथमिक रूप से प्रभावित क्षेत्र	प्रभाव
अवसंरचना विकास	इंडस्ट्रियल राउंड वुड एवं निर्माण	निर्माण परियोजनाओं में फॉर्मवर्क, स्कैफोल्डिंग एवं संरचनात्मक उपयोग की मांग बढ़ती है।
आवासीय विस्तार	इंजीनियर्ड वुड एवं आवासीय क्षेत्र	फ्लोरिंग, पैनलिंग एवं आंतरिक सज्जा में लकड़ी की मांग बढ़ती है।
पैकेजिंग उद्योग का विकास	औद्योगिक लकड़ी एवं पैकेजिंग	ई-कॉमर्स और लॉजिस्टिक्स से पैलेट, क्रेट एवं परिवहन पैकेजिंग की मांग बढ़ती है।
फर्नीचर विनिर्माण में वृद्धि	हार्डवुड एवं फर्नीचर	गुणवत्तापूर्ण फर्नीचर और इंटीरियर उत्पादों के लिए उच्च गुणवत्ता वाली लकड़ी की मांग बढ़ती है।
घरेलू विनिर्माण को प्रोत्साहन	समस्त लकड़ी एवं औद्योगिक क्षेत्र	स्थानीय प्रसंस्करण एवं विनिर्माण से घरेलू आपूर्ति क्षमता मजबूत होने की संभावना रहती है।

सतत निर्माण की प्रवृत्ति	इंजीनियर्ड वुड एवं निर्माण	पर्यावरण-अनुकूल और संसाधन-कुशल निर्माण सामग्री के रूप में लकड़ी के उपयोग को प्रोत्साहन मिलता है।

तालिका 2 से पता चलता है कि भारत में लकड़ी बाजार की वृद्धि किसी एक क्षेत्र पर निर्भर नहीं है। अवसंरचना एवं आवास निर्माण बाजार में लकड़ी की मूलभूत मांग उत्पन्न करते हैं, जबकि फर्नीचर एवं आंतरिक सज्जा इसके मूल्य-वर्धित उपयोग को बढ़ाते हैं। इसी प्रकार ई-कॉमर्स और लॉजिस्टिक्स के विस्तार ने लकड़ी आधारित पैकेजिंग की मांग को नया आधार दिया है। इंजीनियर्ड वुड की विशेषता यह है कि इसका उपयोग निर्माण, फर्नीचर और आंतरिक सज्जा जैसे अनेक क्षेत्रों में किया जा रहा है। इसलिए भविष्य में इंजीनियर्ड वुड बाजार की वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

तालिका 3- भारत के लकड़ी बाजार की प्रमुख बाधाएँ एवं उनके प्रभाव

प्रमुख बाधा	प्रभावित क्षेत्र	संभावित प्रभाव
आयात पर निर्भरता	हार्डवुड एवं फ्लोरिंग	अंतरराष्ट्रीय कीमतों एवं आपूर्ति में बदलाव से लागत बढ़ रही है।
वन संरक्षण एवं पर्यावरणीय नियम	प्राकृतिक लकड़ी एवं निर्माण	वैध कच्चे माल की उपलब्धता सीमित हो रही है।
कीमत के प्रति संवेदनशीलता	इंजीनियर्ड वुड एवं आवासीय क्षेत्र	उच्च कीमत बजट-आधारित उपभोक्ताओं में मांग को सीमित कर रही है।
भंडारण एवं लॉजिस्टिक्स संबंधी समस्याएँ	फ्यूल वुड एवं औद्योगिक लकड़ी	परिवहन, भंडारण एवं थोक प्रबंधन की लागत बढ़ रही है।
वैकल्पिक सामग्रियों की उपलब्धता	निर्माण एवं औद्योगिक क्षेत्र	स्टील, कंक्रीट एवं कंपोजिट सामग्री लकड़ी के कुछ उपयोगों का स्थान ले रही हैं।
सीमित यंत्रीकरण	आरा मिल एवं प्रसंस्करण उद्योग	उत्पादकता तथा लागत दक्षता प्रभावित हो रही है।

तालिका 3 के आधार पर स्पष्ट है कि बाजार में विकास की पर्याप्त संभावनाओं के बावजूद कई संरचनात्मक बाधाएँ मौजूद हैं। आयातित हार्डवुड पर निर्भरता अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमतों और आपूर्ति की अनिश्चितता को भारतीय बाजार तक पहुंचा रही है। दूसरी ओर वन संरक्षण से संबंधित नियम पर्यावरणीय दृष्टि से आवश्यक हैं, किंतु इनके कारण प्राकृतिक लकड़ी की उपलब्धता नियंत्रित रहती है। लकड़ी की कीमत में वृद्धि होने पर निम्न एवं मध्यम आय वर्ग में इसकी मांग प्रभावित हो रहा है। इसके अतिरिक्त निर्माण क्षेत्र में स्टील, कंक्रीट और अन्य कंपोजिट सामग्री की उपलब्धता लकड़ी के उपयोग के विस्तार को सीमित कर रही है। अतः बाजार के सतत विकास के लिए कच्चे माल की वैध एवं स्थिर आपूर्ति के साथ आधुनिक प्रसंस्करण तकनीक आवश्यक है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2
ISSN No: 3049-4176

तालिका 4- भारत के लकड़ी बाजार का प्रमुख बाजार विभाजन एवं संभावित मांग क्षेत्र

बाजार आधार	**प्रमुख श्रेणियाँ**	**प्रमुख उपयोग/मांग क्षेत्र**
टिम्बर प्रकार	ऐश, बीच, बर्च, सीडर, फर, महोगनी, मेपल, ओक	फर्नीचर, फ्लोरिंग एवं उच्च गुणवत्ता वाले आंतरिक उपयोग
अनुप्रयोग	फ्यूल वुड, इंडस्ट्रियल राउंड वुड, इंजीनियर्ड वुड	ऊर्जा, औद्योगिक प्रसंस्करण एवं निर्माण
उपयोग	निर्माण, फ्लोरिंग, पैकेजिंग, परिवहन एवं अन्य	भवन, आंतरिक सज्जा, लॉजिस्टिक्स एवं औद्योगिक गतिविधियाँ
अंतिम उपयोग	आवासीय एवं वाणिज्यिक, औद्योगिक	आवास, कार्यालय, वाणिज्यिक भवन एवं औद्योगिक प्रतिष्ठान
प्रमुख उभरता क्षेत्र	इंजीनियर्ड वुड	निर्माण, फर्नीचर, फ्लोरिंग एवं इंटीरियर
प्रमुख मांग क्षेत्र	निर्माण	आवासीय, वाणिज्यिक एवं आधारभूत संरचना परियोजनाएँ

तालिका 4 भारत के लकड़ी बाजार की व्यापक संरचना को दर्शाती है। बाजार में विभिन्न प्रकार की लकड़ियों के साथ-साथ इंजीनियर्ड वुड का महत्व बढ़ रहा है। उपलब्ध उद्योगगत जानकारी के अनुसार इंजीनियर्ड वुड लागत दक्षता, समान गुणवत्ता और व्यापक उपयोगिता के कारण महत्वपूर्ण बाजार श्रेणी बन रही है। उपयोग की दृष्टि से निर्माण क्षेत्र प्रमुख मांग क्षेत्र के रूप में सामने आता है, जबकि फ्लोरिंग, फर्नीचर, पैकेजिंग एवं परिवहन से जुड़े उपयोग बाजार को विविध आधार प्रदान करते हैं। अंतिम उपयोग के स्तर पर आवासीय एवं वाणिज्यिक क्षेत्र तथा औद्योगिक क्षेत्र दोनों ही लकड़ी की मांग को प्रभावित करते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारत का लकड़ी बाजार बहु-क्षेत्रीय प्रकृति का है और किसी एक उद्योग पर इसकी निर्भरता नहीं है।

समग्र विश्लेषण से यह भी स्पष्ट होता है कि भारत के लकड़ी बाजार में पारंपरिक प्राकृतिक लकड़ी से आधुनिक इंजीनियर्ड वुड की ओर संरचनात्मक परिवर्तन दिखाई दे रहा है। निर्माण एवं फर्नीचर उद्योग के साथ पैकेजिंग तथा लॉजिस्टिक्स क्षेत्र की बढ़ती मांग बाजार के आधार को और विस्तृत कर रही है। यदि कच्चे माल की स्थिर आपूर्ति, आधुनिक प्रसंस्करण, प्रमाणित वानिकी तथा मूल्य-वर्धित उत्पादों को प्रोत्साहन दिया जाता है, तो भारतीय लकड़ी उद्योग भविष्य में अधिक संगठित एवं प्रतिस्पर्धी बन सकता है।

5. सुझाव

1. सतत कच्चे माल की व्यवस्था के लिए कृषि-वनीकरण एवं व्यावसायिक वृक्षारोपण को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, ताकि प्राकृतिक वनों पर अनावश्यक दबाव कम हो।
2. इंजीनियर्ड वुड उत्पादों के घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, जिससे आयात पर निर्भरता कम करने के साथ-साथ स्थानीय रोजगार एवं मूल्य संवर्धन बढ़ाया जा सके।

3. लकड़ी प्रसंस्करण उद्योग में आधुनिक मशीनरी एवं तकनीकी यंत्रीकरण को बढ़ावा देना आवश्यक है, जिससे उत्पादन क्षमता, गुणवत्ता और लागत दक्षता में सुधार हो।
4. फर्नीचर, पैकेजिंग एवं निर्माण क्षेत्र के लिए गुणवत्ता मानकों एवं प्रमाणन व्यवस्था को मजबूत किया जाना चाहिए।
5. लकड़ी आधारित पैलेट, क्रेट एवं अन्य उत्पादों के लिए बढ़ती लॉजिस्टिक्स मांग को देखते हुए वुड-बेस्ड पैकेजिंग उद्योग में निवेश को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
6. वन संरक्षण और उद्योग की कच्चे माल की आवश्यकता के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए वैध एवं प्रमाणित लकड़ी की आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत किया जाना चाहिए।
7. छोटे आरा मिलों एवं लकड़ी प्रसंस्करण इकाइयों को तकनीकी प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता तथा आधुनिक उपकरणों तक पहुंच प्रदान की जानी चाहिए।
8. घरेलू लकड़ी उद्योग को वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए मूल्य-वर्धित लकड़ी उत्पादों एवं निर्यात-उन्मुख विनिर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

6. उपसंहार

भारत का लकड़ी बाजार वर्तमान में परिवर्तन एवं विस्तार के चरण से गुजर रहा है। उपलब्ध उद्योगगत आंकड़ों से पता चलता है कि अनुमानित वार्षिक वृद्धि दर वर्ष 2021 के 3.1 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2025 में 6.4 प्रतिशत हो गई है, जबकि वर्ष 2026–2032 के लिए 7.6 प्रतिशत CAGR का अनुमान बाजार की सकारात्मक भविष्यगत संभावनाओं को प्रदर्शित करता है। निर्माण, आवास, फर्नीचर, फ्लोरिंग, पैकेजिंग और लॉजिस्टिक्स जैसे क्षेत्रों में बढ़ती मांग बाजार के प्रमुख आधार हैं। विशेष रूप से इंजीनियर्ड वुड उत्पादों का विस्तार लकड़ी उद्योग को पारंपरिक कच्ची लकड़ी के बाजार से आधुनिक मूल्य-वर्धित विनिर्माण की ओर ले जा रहा है। हालांकि आयात निर्भरता, कच्चे माल की उपलब्धता, कीमतों में अस्थिरता, वन संरक्षण नियम तथा वैकल्पिक निर्माण सामग्री जैसी चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं। अतः भारत में लकड़ी उद्योग की दीर्घकालीन वृद्धि के लिए सतत वानिकी, कृषि-वनीकरण, घरेलू प्रसंस्करण, तकनीकी आधुनिकीकरण और प्रमाणित आपूर्ति श्रृंखला को एक साथ विकसित करना आवश्यक है। इस दृष्टि से लकड़ी बाजार न केवल निर्माण एवं फर्नीचर उद्योग के लिए अपितु रोजगार, विनिर्माण, पैकेजिंग और सतत आर्थिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण संभावनाएँ रखता है।

संदर्भ

1. 6Wresearch. India Wood Market – Industry Insights, Market Trends, Segmentation and Forecast, 2026–2032. 6Wresearch, India.
2. 6Wresearch. India Wood Market: Historical Data, Forecast, Market Drivers, Challenges and Competitive Landscape. 6Wresearch Industry Database.
3. Government of India. National Agroforestry Policy. Ministry of Agriculture and Farmers Welfare, Government of India.

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

4. Government of India. Pradhan Mantri Awas Yojana (PMAY). Ministry of Housing and Urban Affairs, Government of India.
5. Government of India. Make in India. Government of India.
6. Ministry of Environment, Forest and Climate Change, Government of India. वन संरक्षण, सतत वन प्रबंधन एवं लकड़ी संबंधी नीतिगत दस्तावेज।